हिन्दी - पुष्प

(साउथ एशिया टाइम्स का हिन्दी परिशिष्ट)

वर्ष-६ अङ्क-१०

मई, २०१०

सम्पादकीय

नोबुल पुरस्कार विजेता, रवीन्द्र नाथ टैगोर की १५०वीं वर्षगाँठ और मातृ-दिवस

७ मई को भारत में गुरुदेव, रवींद्रनाथ टैगोर की १५०वीं वर्षगाँठ मनायी जा रही है। वे पहले भारतीय थे, जिन्हें साहित्य में (१९१३ में) नोबुल पुरस्कार से सम्मानित किया गया था। दो वर्षों पश्चात,१९१५ में, उन्हें अँग्रेज़ी सरकार ने 'सर' की उपाधि भी प्रदान की थी, जिसे उन्होंने, जलियाँवाला बाग़ में हुए हत्याकाण्ड, के विरोध में, लौटा दिया था। स्मरणीय है कि जलियाँवाला बाग़ में, ब्रिटिश सरकार के विरुद्ध शांतिमय प्रदर्शन करने वाले ४०० भारतीयों को, जिन में बच्चे तथा स्त्रियाँ भी सम्मिलित थे, अँग्रेज़ी सैनिकों ने गोलियों से भून डाला था। भारत के राष्ट्रगान, 'जन गण मन अधिनायक' की रचना भी रवींद्रनाथ टैगोर ने की थी। शिक्षा के क्षेत्र में 'शांति-निकेतन' स्थापित कर के उन्होंने भारतीय शिक्षा-पद्धति को एक नयी दिशा दी। भारतीय संगीत, साहित्य तथा कला को जीवित रखने तथा प्रोत्साहित करने में उनका योगदान अद्वितीय है।

इस वर्ष, ९ मई को मातृ-दिवस है। भारतीय संस्कृति में, माँ का स्थान बहुत उच्च माना जाता है। 'माँ' शब्द, श्रद्धा व आदर का प्रतीक है। भारतीय संस्कृति में, सभी दिन, माँ के प्रति अपने माता-पिता की सेवा करने तथा उनके प्रति कृतज्ञता दिखाने के होते हैं। पश्चिमी देशों में भी, माँ के महत्त्व को समझा जाता है और साल में कम से एक दिन मातृ-दिवस मनाया जाता है। पश्चिमी देशों की देखा-देखी अब भारत में भी मई के दूसरे रविवार को मातृ-दिवस मनाया जाने लगा है और संतानें अपनी माताओं को उस दिन उपहार देने लगी हैं। परंतु, किसी भी माँ के लिये सबसे बड़ा उपहार, अपनी संतानों का प्यार होता है। यदि बच्चे अपनी माँ का आदर करें, उनसे अच्छी तरह बोलें, उनका ख्याल रखें और उनकी वृद्धावस्था में उनसे छुटकारा पाने के लिये, उन्हें वृद्धाश्रम न भेजें तो उनकी माताएँ उन से प्रसन्न रहेंगी। मातृ-दिवस पर सभी माताओं को बधाई।

हिन्दी-पुष्प के इस अङ्क में विविध विषयों पर कुछ रोचक कविताएँ हैं। इसके अतिरिक्त, भारत के बारे में में एक स्वीडिश महिला का लेख है और 'पदोन्नति' नामक कहानी का पाँचवा भाग है। साथ में 'अब हँसने की बारी है' तथा "सूचनाएँ" स्तम्भ भी हैं। आशा है आपको यह अङ्क पसंद आएगा। आपके विचारों, सुझावों तथा रचनाओं का हम स्वागत करेंगे।

-दिनेश श्रीवास्तव

लेखकों से निवेदन

१. कृपया अपनी रचनाएँ (कहानियाँ, कविताएँ, लेख, चुटकुले, मनोरंजक अनुभव आदि) निम्नलिखित पते पर भेजे -

डा० दिनेश श्रीवास्तव, १४१ हायट स्ट्रीट. रिचमंड, विक्टोरिया ३१२१

(Dr. Dinesh Srivastava, 141 Highett Street, Richmond, Victoria 3121)

२. हस्तलिखित रचनाएँ स्वीकार की जाएँगी परन्तु इलेक्ट्रानिक रूप से हिन्दी-संस्कृत फ़ांट मे रचनाएँ भेजे तो उनका प्रकाशन हमारे लिए अधिक सुविधाजनक होगा।

ई-मेल से रचनाएँ भेजने का पता है-

dsrivastava@optusnet.com.au

३. अपनी रचनाएँ भेजते समय अपनी रचना की एक प्रतिलिपि अपने पास अवश्य रखें।

काव्य-कुंज

मेरे भारत की माटी

- सुभाष शर्मा, गैलस्टन, क्वींसलैंड

मेरे भारत की माटी में
जाने क्या यह बात है
मैं जाऊँ जिस ओर धरा के,
जाती मेरे साथ है

फिरता हूँ हर ओर अकेला,
बस एक वह ही मेरे साथ है
कितना भी मैं दिखूँ अकेला,
करती मुझसे बात है
थपकी देकर मुझे सुलाती,
जैसे आती रात है
मैं जाऊँ जिस ओर धरा के ....

कभी हिमालय की चोटी पर,
चढ़ कर वह चिल्लाती है
हिन्द महासागर की लहरों से
मुझे बुलाती है
याद करूँ सावन की तो,
वह कर देती बरसात है
मैं जाऊँ जिस ओर धरा के ....

कभी तिरंगे की लहरों में,
लहर-लहर लहराती है
कभी शिवाजी और राणा बन,
किस्से हमें सुनाती है
उसकी प्यारी बातों में,
न जाने क्या सौगात है
मैं जाऊँ जिस ओर धरा के ....

सावन में सोंधी मिट्टी की
रह रह याद दिलाती है
जंगल में बन मोर-मोरनी,
सुंदर नाच दिखाती है
रंग बिरंगी माटी,
मेरी माटी की क्या बात है
मैं जाऊँ जिस ओर धरा के ....

कभी बहन बन, हाथ में
मेरे राखी बाँध के जाती है
कभी पड़ोसी बन कर,
मेरा दरवाज़ा खटकाती है
मेरी माटी में
रंगों की देखो क्या इफ़रात है
मैं जाऊँ जिस ओर धरा के ....

कोरे कागज़ सा मेरा मन

-हेमानी किरण, मेल्बर्न

कोरे कागज़ सा मेरा मन,
ये स्मृतियाँ, आकृतियाँ व
परछाइयाँ,
कुछ पहचानी, कुछ अनजानी
गुज़रती हैं पास से, पर छूती नहीं
कोई घनिष्ठता नहीं,
बस घिरा रहता हूँ,
मैं इनके एहसास से

सोचता हूँ, क्यों न इन सब से,
कुछ दुनियावी सफलता के
गुर छाँटकर
बना लूँ एक नाव और
पार करूँ भवसागर
पर इन उमंगहीन,
भौतिक सुखों की
खोज में लिप्त,
मृतप्राय परछाइयों से
यों ही क्यों मन दर्पण में मैला करूँ
क्यों न करूँ समय का इंतज़ार
और देखूँ मेरे भाग्य में क्या बदा है
और रह जाऊँ यों ही कोमल, निर्मल
कोरे कागज़ सा ....

फ़ुर्सत की दौलत

- डॉ. सैफ़ चोपड़ा, मेल्बर्न

उम्रे दराज़ यह मेरी,
नेमत खुद से आयी
फ़ुर्सत की अब यह दौलत
मेरी आख़िरी कमाई

अब तो नहीं सताता,
हमें वक्त का तकाज़ा
मसरूफ़ियत से दूरी,
वक्त दे रहा गवाही

फ़ुर्सत से दोस्ती की
और दोस्ती ज़हन से
दिन रात सोचने पर,
कुव्वत कलम की

जीवन तो तजुर्बा था,
आज बन गया ख़ज़ाना
गुज़री हुई कहानी,
यादों के साथ सजाई

अपने कलाम को सैफ़,
होंठों पर था सजाना
आवाज़ साज़ मिला कर,
सुन लो, जो धुन बनाई

तितली भोली-भाली

- नलिन कान्त, मेल्बर्न

मैं तितली थी भोली-भाली
बगियन उड़ती डाली-डाली
भँवरे करते गुंजन-गुंजन
मेरे पंख बजाते ताली-ताली

मैं तितली थी. .....

तभी घोर अँधेरा दिन में हुआ
तूफ़ाँ ने मुझ को आ घेरा
कोमल पंख हुए मेरे चूर-चूर
जीवन हुआ ज्यों खाली-खाली
मैं तितली थी. .....

पर अंतर्मन से आवाज़ उठी
तेरी मंजिल है अभी दूर कहीं
कर ध्यान ॐ का धूनी रमा
मैं उठी धरा से ज्यों काली
मैं तितली थी. .....

मंजिल को पाने निकल पड़ी
तूफ़ाँ से लड़ने निकल पड़ी
आये राह में जो भी रोड़े
उन्हें यार बना, मंजिल पा ली
मैं तितली थी. .....

मैं तितली हूँ बलशाली
जग में चहकूँ डाली-डाली

भारत से क्या सीखा जा सकता है*

(मालिन स्टाटनर स्वीडन निवासी एक महिला हैं। इस लेख में उन्होंने, भारत पर्यटन के बाद,भारत के बारे में अपने विचार प्रकट किये हैं। लेखिका ने जो कुछ स्वीडन के बारे में कहा है, वह अन्य विकसित देशों, उदाहरण के लिये, इंग्लैंड, अमेरिका, कैनाडा, ऑस्ट्रेलिया आदि देशों पर भी लागू होते हैं - सम्पादक)

-मालिन स्टाटनर, स्वीडन

एक अठारह वर्ष की स्वीडिश युवती के लिए भारत भ्रमण एक नितांत नया व भिन्न अनुभव है। जब मैं भारत पहुँची तो पहले-पहल लगा कि भारत में इतनी अधिक संख्या में लोग रहते हैं कि वे हर जगह दिखाई देते हैं। स्वीडनवासी होने के नाते इतने सारे लोगों को देखना मुझे अजीबोग़रीब लगा - लेकिन फिर महसूस हुआ कि भारत एक विशाल देश है। आप अपनी छोटी सी दुनिया और रोज़मर्रा के जीवन के इतने अभ्यस्त हो जाते हैं कि नए परिवेश में अपने को ढालने में कुछ समय लगता है।

स्वीडन और भारत के बीच सबसे बड़ा अंतर दोनों देशों के निवासियों को लेकर ही है। वस्तुत: स्वीडन के लोग भारतवासियों से बहुत कुछ सीख सकते हैं, जो उनसे बहुत भिन्न है। भारतवासियों का व्यवहार मित्रवत और सौहार्दपूर्ण है। वे एक-दूसरे से बातचीत करना पसंद करते हैं, खुले दिमाग वाले हैं और दूसरे की बात सुनने का उनके पास वक़्त होता है। दूसरी ओर स्वीडनवासी सदा अत्यंत व्यस्त रहते हैं- हमेशा जल्दी में होते हैं और यदि कोई अनजान व्यक्ति उनसे बात करना चाहता है तो वे यह सोचने लगते हैं कि उस व्यक्ति को क्या समस्या है और वह उन्हें क्यों परेशान कर रहा है? स्वीडनवासी किसी की अधिक परवाह नहीं करते - मसलन अपने पड़ोसियों की भी नहीं। वे आत्मकेन्द्रित लोग हैं और अपनी-अपनी जीवन चर्या में व्यस्त हैं क्योंकि वे लोग मिलनसार नहीं हैं। इसके विपरीत भारतवासी एक-दूसरे का बहुत ख़्याल रखते हैं।

भारतवासियों के बारे में सबसे अच्छी बात यह है कि वह अपने परिवार के वृद्धजनों की यथोचित देख-रेख करते हैं। वे सब एक साथ रहते हैं और वृद्ध व्यक्ति परिवार का अभिन्न सदस्य होता है। जबकि स्वीडन में अधिकांश वृद्ध व्यक्तियों को वृद्धाश्रम में डाल दिया जाता है। यही नहीं स्वीडनवासी अक्सर अपने माता पिता को भी भूल जाते हैं। उनके विचार में उन्हें उनकी देखरेख से अधिक महत्वपूर्ण काम करने होते हैं।

लेकिन स्वीडनवासी वक़्त के बहुत पाबंद होते हैं और हर काम समय पर करते हैं। यह संभवत: इसलिए क्योंकि वे कठिन परिश्रम करते हैं। उनकी तुलना में भारतवासी आज़ाद तबियत के हैं और समय की पाबंदी की अधिक परवाह नहीं करते हैं। वे किसी स्थान पर तभी पहुँचते हैं जब उन्हें लगता है कि उनके पास समय है। यह कई बार बहुत अखरता है और ख़ास कर तब जब आप स्वीडनवासी हों। लेकिन साथ-साथ आपको उनकी विचारधारा की प्रशंसा करनी होगी। वे तनावों से ग्रस्त नहीं हैं और तनाव संबधी रोगों से अछूते हैं, जिनसे स्वीडनवासी ग्रस्त हैं।

गंगा नदी में नौका-विहार करते हुए माँ-बेटी

इसलिए भारत से हम क्या सीख सकते हैं? यहाँ के निवासियों का मूल स्वभाव मैत्रीपूर्ण, सरल, सकारात्मक, सामाजिक और हितकारी है। उनका व्यवहार हमें अन्य लोगों की देखभाल करने की प्रेरणा देता है और आत्मकेंद्रित होने से रोकता है। यह बात, जीवन में किसी भी अन्य बात से कहीं अधिक महत्वपूर्ण है।

* इण्डिया पर्सपेक्टिव्ज़ के सौजन्य से

पदोन्नति* (भाग ५)

(आपने इस कहानी के पिछले भागों में पढ़ा कि पदोन्नति के बाद, सुनंदन बाबू की भेंट रिटायर्ड मेजर कृष्णामूर्ति से हुई जो अपने कुत्ते को टहलाने लाये थे। सुनंदन बाबू को लगा कि कुत्ता पालना बड़प्पन की निशानी है। अपने भतीजे दिवाकर के साथ, गाँव से शहर लौटते समय सुनंदन को गाँव की गली में एक सुंदर कुतिया दिखायी दी। अब आगे की कहानी पढ़िये - सम्पादक)

-श्रीनिवास वत्स

सुनंदन उस कुतिया के आकर्षक रूप-लावण्य पर मुग्ध हो गये। सोचा, यह तो मेजर कृष्णमूर्ति के कुत्ते से कहीं कम नहीं। मुफ़्त मिल रही है, क्यों न इसे शहर ले चलूं? सुबह पार्क में घूमते समय साथ चलेगी तो आम अफ़सरों में रौब बनेगा, मुहल्ले में इज़्ज़त बढ़ेगी। फिर गाँव की कुक्करी है। जैसा रूखा-सूखा देंगे, खा लेगी। शहरी कुत्तों वाले नाज़-नख़रे तो नहीं करेगी।

यह सब विचारने में क्षण-भर से अधिक समय नहीं लगा। उन्होंने दिवाकर से कहा-"जैसे भी हो, इस कुतिया को पकड़ो, इसे अपने साथ शहर ले चलेंगे। दिवाकर हैरान था पर सुनंदन का आदेश मानकर उसने थोड़ी भाग-दौड़ के बाद कुतिया को पकड़ लिया। फिर बड़ी मुश्किल से उसे गोद में लेकर स्कूटर पर बैठाया और स्वयं पीछे बैठा। सुनंदन बाबू स्कूटर चला रहे थे। स्कूटर की आवाज़ के कारण कुतिया डरकर चिल्लाने लगी। पर वे धुन के पक्के थे। वहाँ से चले तो घर आकर ही साँस ली।

श्रीमती सुभद्रा एवं बच्चे घर में कुतिया के आगमन से जितने प्रसन्न थे, उतना ही कष्ट उन्हें दिवाकर को देख कर हो रहा था। जब उन्हें पता चला कि यह अब यहीं रहेगा तो उनकी त्यौरियाँ और चढ़ गईं। श्रीमती सुनंदन ने पति को उनकी सहृदयता के लिए लताड़ा। एक तरफ ले जाकर बोलीं-"तुम्हें ज़रा भी अक्ल नहीं? मना क्यों नहीं कर दिया। यहाँ महँगाई में अपना ही पेट पालना दूभर हो रहा है, ऊपर से इस मुस्टंड को और ले आए। बहाना बना कर टाल देते। चाची एक बार बुरा मान लेतीं। अब कैसे भुगतेंगे इसे? अगले महीने मोहल्ले की औरतों को दावत देनी है। दो माह हो गए टालते हुए।"

"अरे सब हो जाएगा, क्यों चिंता करती हो। जी·पी·एफ· से पैसा निकलवा लेंगे। सुनंदन बाबू ने उसका ग़ुस्सा ठंडा करने की कोशिश की।

बिट्टू बाज़ार से कुतिया को बाँधने के लिए ज़ंजीर लेने चला गया। बबली और राजू ने मिलकर घर के एक कोने में पेटी पर टाट डालकर कुक्कुरी के लिए छोटा-सा घर बना दिया।

स्वच्छंद विचरण करने वाली कुतिया को यह बंधन बड़ा अजीब-सा लग रहा था। यद्यपि सभी ने अपने हाथों से उसे रोटी का एक-एक टुकड़ा खिलाया। सुनंदन बाबू ने प्याली भर दूध पिलाया। पर यह सब डकार कर भी कुक्कुरी कूँ-कूँ करती रही। गले में पड़ी जंज़ीर को तोड़ने का प्रयास करती। कभी इधर आती तो कभी खिड़की पर अगले पैर रखकर आधी खड़ी हो जाती।

बिट्टू बोला-"रफ़ीक का कुत्ता अँग्रेज़ी समझ लेता है। मैं भी इसे अँग्रेज़ी सिखाऊँगा।

बबली बोली-"मैं इसका नाम मिस फ़्लूडी रखूंगी।"

"तब तो लेडी फ़्लूडी कहेंगे।" राजू ने चुटकी ली।

कुतिया चिल्लाए जा रही थी। उसका शोर सुन कर घर के आस-पास गली के आवारा कुत्ते जमा हो गए।

मिस फ़्लूडी सारी रात चिल्लाती रही। सुनंदन बाबू का परिवार तो जागा ही, पड़ोसियों की भी नींद हराम हो गई। मकान मालिक रात-भर बड़बड़ाता रहा-"पता नहीं कहाँ से आफ़त ले आए? दो दिन में इन लोगों को ऐसी हवा लगी है, पूछो मत।

(क्रमश:)

***भारत-संदर्श के सौजन्य से**

सम्पादक के नाम पत्र

हिन्दी पुष्प के पिछले अङ्क में राजेन्द्र चोपड़ा की कविता 'प्रवासी बूढ़े माता-पिता' बहुत पसंद आयी। उन्हें 'बाग़बान' फ़िल्म देखनी चाहिये। रिटायर्ड जीवन की आधुनिक तकनीक है - 'अपना मुँह बंद रखो और अपने पर्स का मुख खुला रखो'। तब तुम्हारी संतानें कहेंगी की उनके पिता बहुत महान हैं।

- अरुण खन्ना

महत्वपूर्ण तिथियाँ

१ मई (अंतर्राष्ट्रीय श्रमिक दिवस, महाराष्ट्र-दिवस), ७ मई (स्वर्गीय रवीन्द्र नाथ टैगोर का जन्म-दिवस), ८ मई (द्वितीय विश्व-युद्ध की समाप्ति की वर्षगाँठ), ९ मई (मातृ-दिवस), २७ मई (बुद्ध-पूर्णिमा),
२० जून (भारत, अमेरिका, कैनाडा, इंग्लैंड आदि देशों में पितृ-दिवस)।

सूचनाएँ

१. सोनू निगम द्वारा प्रस्तुत संगीत कार्यक्रम - (शनिवार, २२ मई)
स्थान - मेल्बर्न कन्वेन्शन ऐन्ड एक्ज़ीबीशन सेन्टर, मेल्बर्न
अधिक जानकारी के लिए सम्पर्क कीजिये - (०३) ८६८९ ००५४

२. अँग्रेज़ी नाटक 'सामी' (गांधी जी के मोहन से महात्मा बनने की कहानी) - रविवार २३ मई
भारतीय विद्या भवन द्वारा प्रायोजित तथा 'मानसून वेडिंग' के निर्देशक लिलेट दुबे द्वारा निर्देशित
अधिक जानकारी के लिए निम्नलिखित वेबसाइट देखिये - www.nblexpos.com/sammy

३. संगीत-संध्या
(विशेष आकर्षण- मेल्बर्न के 'हिन्दुस्तानी' संगीत के गायक, श्री बिक्रम मल्हार जी का कार्यक्रम)
तिथि व समय - शनिवार, ५ जून, रात के ८.०० बजे से १२ बजे तक। प्रवेश नि:शुल्क है।
स्थान - ब्रेन्डन पार्क प्राइमरी स्कूल, कूटामुंड्रा ड्राइव, ह्वीलर्स हिल, विक्टोरिया मेलबर्न (मेलवे संदर्भ ७१ ई-११)।
कार-पार्क का प्रवेश निनेवाह क्रेसेन्ट (Ninevah Crescent) से है। अधिक जानकारी के लिए राधेश्याम गुप्त जी को (०३) ९८४६ २५९५ अथवा (०४०२) ०७४२०८ पर फ़ोन कीजिए अथवा निम्नलिखित वेबसाइट देखिये - http://www.sharda.org/Events.htm

४. ज़ी-टेलीविज़न पर प्रसारित कार्यक्रम 'लिटिल चैम्पियनस्' के चार बाल-कलाकारों (मानसी भारद्वाज, तन्मय चतुर्वेदी, ऐश्वर्या आनंद तथा व्योम कपूर) द्वारा प्रस्तुत संगीत कार्यक्रम (शनिवार, ५ जून)।
स्थान - बॉक्सहिल टान हॉल, मेल्बर्न
अधिक जानकारी के लिए नजीब से (०४२५) ७६१ ११६ पर अथवा सबरीना से (०४३३)११६ ६०३ पर सम्पर्क कीजिये।

अब हँसने की बारी है

१. डाक्टर और मरीज़

एक डाक्टर, एक मरीज़ के पीछे दौड़ा भागा जा रहा था। रमेश ने उस से पूछा - क्या बात है डाक्टर साहब, आप इस तरह क्यों भाग रहे हैं? डाक्टर ने जवाब दिया - चार बार यह मरीज़ ऐसा ही कर चुका है। इसके मस्तिष्क की शल्य-चिकित्सा होनी है। आपरेशन के पहले सिर के बाल काटना आवश्यक होता है। जैसे ही इसके बाल कट जाते हैं-यह आपरेशन-टेबल से उठ कर भाग जाता है।
रमेश- बहुत चालाक है, बाल-कटाई के पैसे बचाता है।

२. राजू की प्रार्थना

राजू ने भगवान से प्रार्थना की -"हे भगवान, मुझे एक रुपयों से भरा बैग, एक नौकरी और लड़कियों से भरा एक बड़ा सा वाहन, दे दो"।
भगवान ने कहा - तथास्तु!
दूसरे दिन से राजू महिलाओं के एक विद्यालय की बस का कंडक्टर बन गया।